॥ भानजे के नाम पर एक ख़त ॥

के. टी. श्रीधर

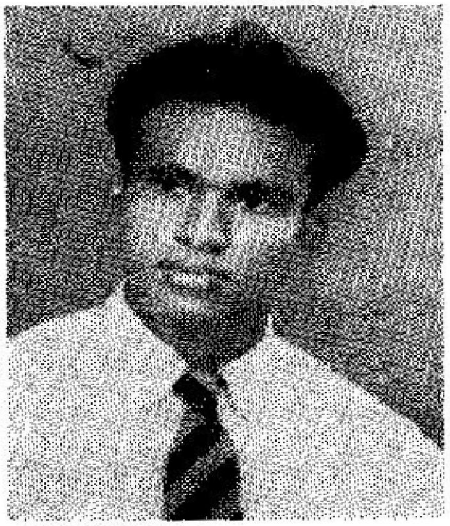

फ़ारूक कॉलेज,
५ दिसंबर '६०.

प्यारे भानजे,

पिछले हफ़्ते में मैं ने जो ख़त लिखा था वह तुम्हें मिला होगा। आज के ख़त में तुमको किफ़ायत के बारे में लिखता हूँ, गौर से पढ़ो।

कुछ विद्यार्थी बड़े ख़र्चीले होते हैं। जहाँ एक रूपया ख़र्च करने से काम बन जाता है वहाँ दस रूपये ख़र्च करते हैं। दिन में पाँच छे बार चाय पीते हैं, हफ़्ते में सातों दिन सिनिमा जाते हैं। कपड़े उनको सबसे बढ़िया चाहिए। वे पैसे को हाथ का मैल समझते हैं और मनमाना ख़र्च करते हैं। थोड़े ही दिनों में उनके पास एक नया पैसा भी नहीं बचता।

मगर कई विद्यार्थी जहाँ एक रुपया ख़र्च करते हैं वहाँ एक आने से काम चलाना चाहते हैं। वे कभी नित्योपयोगी चीज़ें नहीं ख़रीदते रोज़ किसीसे माँग कर दिन बिताना चाहते हैं।

पैसे को पानी की तरह बहा देना भी ठीक नहीं और दाँतों से दबाये रहना भी उचित नहीं। दोनों के बीच का रास्ता अपनाना चाहिए। हमको चाहिए कि जहाँ ख़र्च करना ज़रूरी हो वहाँ ख़र्च करें। अनावश्यक एक नया पैसा भी ख़र्च न करें।

दुनियाँ में कई तरह की चीज़ें हैं, कुछ अत्यंत ज़रूरी हैं; कुछ सिर्फ़ आडंबर के लिए। जिन चीज़ों की बड़ी ज़रूरत है उनके पीछे पैसा ख़र्च करने में कंजूसी नहीं दिखानी चाहिए। इसी का नाम है किफ़ायत। कम ख़र्च से कुछ पैसा बच सकते हैं। जो पैसा बच जाएगा वह ज़रूरत के समय काम आएगा, और पैसे के अभाव से ज़रूरी कामों में अड़चन नहीं पड़ेगी।

किफ़ायत पैसे के मामले में ही काफ़ी नहीं। जो अच्छे नागरिक हैं वे सार्वजनिक क्षेत्र में भी किफ़ायत से पेश आते हैं जो ऐसा नहीं करता वह देश का दुश्मन है। हम कभी कभी देखते हैं कि रेलगाड़ी का पंखा खुला छोड़कर कोई गाड़ी से उतर जाता है। कोई बिजली की बत्ती जलती छोड़ जाता है। कोई गाड़ी की शीशों को तोड़ डालता है। कई आदमी ऐसे हैं जो डाक घर से तार या मनि आर्डर के २-३ फ़ार्म ले लेते हैं, मगर एकाध ही इस्तेमाल करते हैं और बाक़ी फेंक देते हैं।

शायद लोग सोचते हैं कि इस में हमारा

नुक्सान क्या है, नुक्सान तो रेल, तार या बिजलीवालों का है। मगर वे भूल जाते हैं कि रेल, डाक घर और बिजली की कंपनियाँ हमारी है। इसलिये उनका नुक्सान हमारा ही नुक्सान है। अगर रेल गाड़ी में पंखे बेकार चलते रहेंगे, डाक घर के फ़ार्म बरबाद हो जायेंगे तो इन विभागों का खर्च बढ जाएगा। तब रेलगाड़ी का भाड़ा या डाक महसूल बढ़ाना पड़ेगा और पीछे हमीं को वह पैसे चुकाने पड़ेंगे। जो अच्छा नागरिक है वह न कभी कोई चीज़ बरबाद करता है और न दूसरों को करने देता।

इसलिए किफायत, रूपये खर्च करने में ही नहीं, आम व्यवहारों में भी ज़रूरी है। ऐसी ही किफायत से हम सच्चे नागरिक ही नहीं बल्कि सच्चे इनसान बन जाते हैं।

शेष समाचार फिर कभी। बच्चों को उनके मामा का प्यार कहना।

तुम्हारा मामा,

कासरगोड़वाला.

॥ प्यारा तारा, प्यारा तारा ॥

M. P. VASUDEVAN, B.Sc. III.

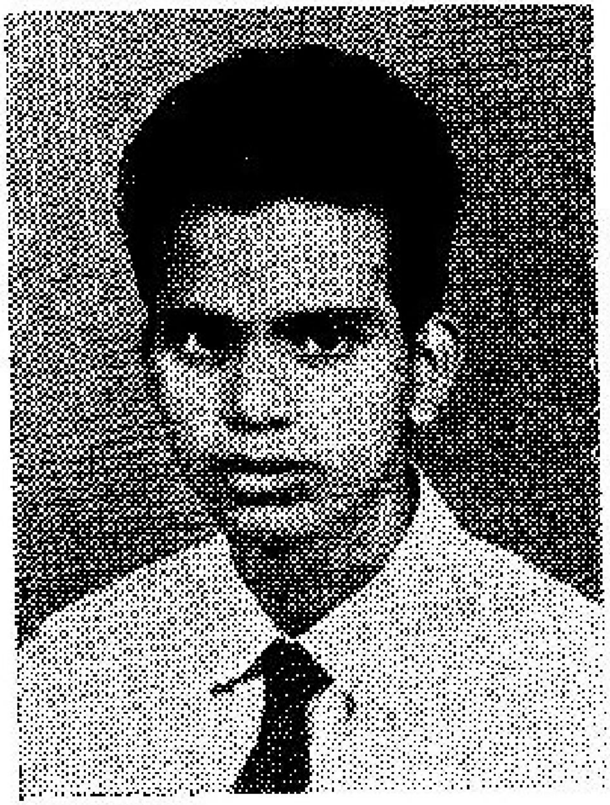

श्यामाँबर में टिम टिम करता,
शोभित तारा मुझे पुकारता,
ऐसी बातें करने लगता,
जैसे मुझ को सलाह देता ।

"लालच मत करो तुम भाई,
लांछित दुनियाँ में छल छाई,
कोई किसीको प्यार न करते,
कोसते आपस में लोग रहते ।
ऐसी दुनियाँ को तुम छोडो,
स्वस्ती गगन में आकर ढूँढो ।"

तारे की ये बातें सुनकर,
मेरे मन में उठे विचार ।
आखिर मैं ने विद्रोह भाव से
प्रखर ज्योति को जवाब दिया ।

"तो भी जरूर मैं जिन्दा रहूँ,
लडकर निष्ठुर नीति से ।
जब तक मेरी आशाओं की
सफलता पृथ्वी में न आती,
तब तक मैं ने निश्चय किया,
डटकर जीना दुनियाँ में ।"

इतना कह मैं ने आँखें मुँदीं,
फिर खोलीं तो तारा गायब!
प्यारा तारा, प्यारा तारा,
कहाँ गया तु मुझ को छोडकर?

॥ वह पगली ॥

के. येम. सरस्वती, B.Sc. II.

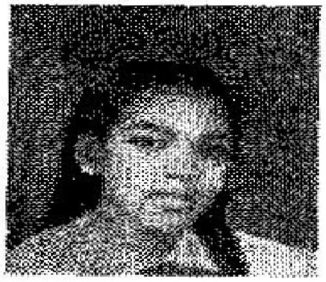

माँ........मुझे भी ले जा । ईश्वर के यहाँ क्या मेरे लिए स्थान नहीं है? माँ........माँ........माँ............

मैं अपनी पुस्तक में सारा ध्यान इकट्ठाकर "केमिस्ट्री" के तत्वों से युद्ध कर रही थी । इतने में ही एक रोदन मेरे कानों में सुनाई पडा । मैं ने कर्टन के बीच से बाज़ार की तरफ़ देखा । आ! एक पागल युवती बाज़ार में अपनी जटा में बायाँ हाथ लगाकर एक हाथ से फटे कपडों की गठरी थामे ऊपर देखकर इस प्रकार रो रही थी । ध्यान लगाकर देखने पर मैं समझ गयी वह वनजा है । वह मेरी सहपाठिनी है ।

मैं वनजा की यह हालत देखकर बहुत दुखी हुई । क्योंकि यह कैसा वेष है? स्मरण में भूतकाल के सुवर्णदिन आये । 'वनजा'— वह उस देश के किरीटहीन राजा चंद्रशेखर के पुत्री-रत्न थी । वे बडे धनी लोग थे । 'रामनाथपुर' के सब लोग चंद्रशेखर से दबते थे । वनजा एक राजकुमारी के जैसे सर्वालंकारविभूषित होकर स्कूल अपसरा के समान आया करती थी । वह हर क्लास में बहुत हंसी-दिल्लगी करती थी । सभी अध्यापक उसे पसंद करते थे । क्योंकि वह कुलीन थी । उसे किसी चीज़ की कमी न थी । उसकी ममेरी बहन कृष्णा हमारी क्लास में पढती थी । वह वनजा से गरीब थी । वह नम्र थी । फटे कपडे ही नसीब होते थे । वनजा की दोस्ती बहुत धनी लडकियों से थी । वे सब बढिया पोशाक पहने आया करती थीं । अपने मामा की बेटी कृष्णा से न बोलती थी न चालती थी । वे सब नटखट थीं । हर क्लास में वे हलचल मचाया करती थीं ।

कालचक्र घूमता रहा । हम सब एस. एस. एल. सी. में पढती थीं । हमारी क्लास में ही थीं वनजा, कृष्णा-वनजा की सखियाँ प्रेमी, कनक और रमा । हम सब एक क्लास में पढती थी । वनजा अपना धन, संपत्ती और आडंबर पर घमंड करती थी । उसकी माँ बचपन में ही चली गयी थी । चंद्रशेखर को एक भयंकर रोग ने दबा लिया । उस के धन का एक बडा हिस्सा इलाज के लिए खर्च हुआ । लेकिन क्या फल? धनी-और-अमीर ईश्वर की आँखों में उस तरह की फरक नहीं । कालराज का पुष्पक विमान चंद्रशेखर का जीवन लेकर ही रहा । वनजा के घमंड के लिए ईश्वरीय दंड!!

वनजा एक धूर्त भाई सुरेश था । पिता के चले जाने के बाद सुरेश के बहुत मित्र पैदा हुए । वे पिता का धन लेकर खर्च करने लगे । रोज़ आदमी अतिथी के रूप में घर में मौजूद रहते ।

नौकर चाकरों को बहुत काम करता था ।

सुरेश शराब पीता था । उसके कुसंग के कारण सारी धन संपत्ती लुट गयी । वनजा की हालत क्या थी ? एक दिन वह अपने प्रेमी गोपी से बातचीत कर रहा थी । बहुत पीकर सुरेश वहाँ आगया । यह दृश्य देखकर वह नाराज़ होकर गोपी को बुरी बातें कहीं और जीवन के लिए वहाँ से जाने की आज्ञा भी दी । दिन बीत गये । सुरेश अपना यह कुसंग नहीं छोडा । घर आनेवाले सुरेश के साथि ने उस लडकी को अपने काम पूर्ती का साधन बनाया था । वनजा असहाय थी । उसका गोपी भी नहीं आता था । उसको अपना जीवन असहनीय मालूम हुआ । पिता की सारी संपत्ती लूटाकर ऋण बद्ध होकर सुरेश राज्य से भाग गया ।

ऋणदाता सुरेश के घर में आकर तकाज़ा करने लगे । अंत में उन लोगों ने वनजा का घर भी ले लिया । वनजा गतिहीन हो गई । उसका हृदय विहीर्ण हो गया । अब उसको एक ही कपडा एक हफ़्ते तक पहनना पडता । उसने आत्म त्याग करने का विचार किया । लेकिन ईश्वर उसकी जीवन सरणी एक और भूमि से बहाने की अनुमती दी । वह एक पगली हो गयी । इधर उधर घूमते फ़िरते दिन काटने लगी । देखो ! घमंड का फल ! प्रताप का अंत !

सोफ़े में बैठे बैठे मेरे सामने यह सारा किस्सा चित्रपट के सामने आता रहा । मैं ने एक दीर्घ निश्वास खींचकर वनजा को पुकारने के लिए बाज़ार की ओर देखा । लेकिन वह अपने दुख के साथ ईश्वर को पुकारते पुकारते वहाँ से ओझल हो गयी थी । लेकिन अब भी उसका रोदन वहाँ गूँज रहा था । "ईश्वर उसे शान्ती दे" मैं ने अपने मन में कहा ।